वर्ष 16, अंक 9, मई 2023
ISSN: 2277-7857

समकालीन हस्तक्षेप

साहित्य, समाज और संस्कृति की पूर्व-समीक्षित मासिक शोध-पत्रिका

संपादक

डॉ. कपिल कुमार गौतम

'समकालीन हस्तक्षेप' एक पूर्व-समीक्षित मासिक शोध-पत्रिका है। इसका ISSN 2277-7857 तथा SJIF 2023 = 7.858 है। इस शोध-पत्रिका में प्रकाशन हेतु मुख्य विषय हिंदी साहित्य, सामाजिक विज्ञान, मानविकी, संस्कृति, कला, समसामयिक मुद्दे आदि हैं।

www.hastakshep.co.in

editor@hastakshep.co.in

+91 - 9431109143

वर्ष: 16, अंक: 9, मई 2023

समकालीन हस्तक्षेप

साहित्य, समाज और संस्कृति की पूर्व-समीक्षित मासिक शोध-पत्रिका

'समकालीन हस्तक्षेप' मासिक शोध-पत्रिका में प्रकाशित शोध-पत्रों/ लेखों के माध्यम से व्यक्त किये गए विचार और स्थापनाएं लेखक के अपने हैं। उनके विचार और स्थापनाओं से संपादक मंडल अथवा प्रकाशक सहमत हों, यह जरुरी नहीं है। शोध-पत्रों/ लेखों में व्यक्त विचारों और स्थापनाओं के लिए सम्बन्धित लेखक स्वयं जिम्मेदार होंगे। विवाद की स्थिति में सभी मामले केवल भद्रक न्यायालय (उड़ीसा) के अधीन होंगे।

इस शोध-पत्रिका के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। समीक्षा, लेखों तथा शोध-पत्रों में उद्धरण के अतिरिक्त, प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश का अनुवाद, प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक माध्यम से पुनर्प्रकाशित नहीं किया जा सकता। केवल सम्बंधित शोध-पत्र के लेखक ही अपने शोध-पत्र को अकादमिक तथा व्यक्तिगत उपयोग करने हेतु निर्बाध रूप से स्वतंत्र होंगे।

© समकालीन हस्तक्षेप

वर्ष: 16, अंक: 9, मई 2023

कवर पेंटिंग: गौरीप्रवा सिंह

Published by

RESEARCH WALKERS
2nd Floor, Rout Niwas, Kuansh,
Near Town Police Station, Bhadrak,
Odisha, India – 756100

E-mail: editor@hastakshep.co.in
Website: www.hastakshep.co.in
WhatsApp No.: +91 94311 09143

संपादक मंडल

संपादक

डॉ. कपिल कुमार गौतम
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
संघटक राजकीय महाविद्यालय, मीरापुर, बांगर, बिजनौर,
एम.जे.पी. रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश

प्रबंध-संपादक

शेषनाथ वर्णवाल
मैनेजिंग पार्टनर, रिसर्च वॉकर्स,
रॉउत निवास, नियर टाउन पुलिस स्टेशन,
कुआंश, भद्रक, ओडिशा

उप-संपादक

डॉ. अलका धनपत
पुर्व-विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग,
स्कूल ऑफ़ इंडियन स्टडीज़, महात्मा गाँधी इंस्टिट्यूट,
यूनिवर्सिटी ऑफ़ मॉरीशस, मॉरीशस

डॉ. रजनी बाला अनुरागी
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, राजिंदर नगर,
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. मोहन लाल चढ़ार
एसोसिएट प्रोफेसर,
प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग,
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,
अमरकंटक, मध्य प्रदेश

डॉ. दीनानाथ
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
सीएमपी डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

<u>संपादक मंडल सदस्य</u>

डॉ. हंसा दीप
लेक्चरार हिंदी, भाषा अध्ययन विभाग,
यूनिवर्सिटी ऑफ़ टोरंटो, किंग्स कॉलेज सर्किल,
टोरंटो, ओंटारियो, कनाडा

डॉ. विपिन कुमार शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग, बिष्ट राजकीय महाविद्यालय,
श्रीदेव सुमन विश्वविद्यालय, लंबगांव,
टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड

डॉ. प्रवीण कटारिया
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय,
मेरठ, उत्तर प्रदेश

डॉ. अनीश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. रजत शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
लक्ष्मीबाई कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

डॉ. प्रदीप कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग,
सत्यवती कॉलेज, अशोक विहार
दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. लेखराम सेलोकर
पी-एच. डी. (बौद्ध अध्ययन)
आनंद बुद्ध विहार, समता नगर,
नागपुर, महाराष्ट्र

डॉ. अमित कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय,
राजा गार्डन, नई दिल्ली

डॉ. संदीप कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, फैकल्टी ऑफ़ लीगल स्टडीज,
मदरहूड विश्वविद्यालय, रूडकी, उत्तराखंड

डॉ. राहुल सिद्धार्थ
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
साँची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन
विश्वविद्यालय, साँची, मध्य प्रदेश

डॉ. उमाशंकर कौशिक
असिस्टेंट प्रोफेसर, योग शास्त्र
के.जे. सोमैया इंस्टिट्यूट ऑफ़ धर्मा स्टडीज,
सोमैया विद्या विहार विश्वविद्यालय,
पूर्वी मुंबई, महाराष्ट्र

डॉ. अवधेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर (अतिथि), हिंदी विभाग,
डॉक्टर हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
सागर, मध्य प्रदेश

डॉ. प्रत्युष प्रशांत
पी-एच.डी., सेंटर फॉर वीमेंस स्टडीज,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

डॉ. धनंजय जैन
असिस्टेंट प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष,
योग विभाग, कलिंग विश्वविद्यालय, अटल नगर,
नया रायपुर, रायपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. सुनीता गुरुङ्ग
अतिथि प्रवक्ता (हिंदी), श्यामलाल कॉलेज,
मुक्त शिक्षा विद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

डॉ. लोकेश चौधरी
असिस्टेंट प्रोफेसर, योग विज्ञान विभाग,
श्री कल्लाजी वैदिक विश्वविद्यालय,
निंबाहेड़ा, चित्तौड़गढ़, राजस्थान

डॉ. आमिर खान अहमद
असिस्टेंट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग,
हरि-गायत्री दास महाविद्यालय, अज़रा
गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी, असम

डॉ. विकास कुमार पाठक
शैक्षिक सलाहकार, भारतीय भाषा समिति,
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

अनुक्रम

वर्ष: 16, अंक: 9, मई 2023

सम्पादकीय

1.	पर्यावरण संरक्षण में आदिवासी संस्कृति एवं परम्पराओं की भूमिका	डॉ० स्निग्धा रावत, हिमांशु प्रभाकर	8-12
2.	वैश्वीकरण के दौर में जनजातीय समाज: समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण	धीरज प्रताप मित्र, अवधेश कुमार	13-19
3.	मीडिया के बदलते स्वरूप का वर्तमान समाज पर प्रभाव	प्रो. चंदा बैन	20-23
4.	बुन्देलखण्ड की कला, संस्कृति एवं साहित्य : एक अनुशीलन	प्रो. नागेश दुबे, डॉ. मोहन लाल चढ़ार	24-29
5.	पारंपरिक नाट्य परंपरा का स्वरूप एवं रंगमंचीय आलेख	डॉ. संजीब कुमार	30-35
6.	देवेन्द्र सत्यार्थी का उपन्यास और कला जगत	स्मृति कुमारी	36-39
7.	प्रेमचंद का समकालीन नारी उत्थान	डॉ. देवपाल सिंह बैरवा	40-43
8.	मीराबाई के काव्य में प्रतिरोध के स्वर	डॉ. सुजाता मिश्र	44-47
9.	आधुनिक विश्व में मानवता की रक्षक श्रीमद्भागवत गीता का सांस्कृतिक अध्ययन: विश्व बंधुत्व के महामंत्र 'वसुधैव कुटुंबकम्' के विशेष सन्दर्भ में एक विश्लेषण	धीरज कु. निर्भय	48-52
10.	नई शिक्षा नीति 2020 विभिन्न बदलाव और मूल्यांकन	नेहा शर्मा	53-55
11.	बदलता भारत : आदिवासी विकास के मुद्दे और चुनौतियां	डा. नीलांजना जैन, पूजा गुप्ता	56-61
12.	भूमण्डलीकरण और असग़र वजाहत की कहानियाँ	प्रेमचन्द्र	62-65

सम्पादक की कलम से...

सभ्यता और संस्कृति, किसी जन समुदाय के द्वारा सम्पूर्ण जीवन में अर्जित की गई सबसे महत्वपूर्ण पूँजी होती है। इस पूँजी पर अप्राकृतिक एवं अनावश्यक रूप से बाह्य हस्तक्षेप होने की दशा में पहचान एवं अस्मिता का संकट स्वरूप ग्रहण करता है। पहचान का यह संकट प्रभावित समुदाय को भयाकुल करता है। जिसके उपरांत विचार-विमर्श के साथ सामाजिक पुनरावलोकन की दिशा में प्रयास किए जाते हैं। समकालीन दौर में कई वंचित समूहों की अस्मिता एवं अस्तित्व के लिए विमर्शगत संघर्ष जारी है। इन अस्मितागत संघर्षों में आदिवासी संघर्ष एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट विमर्श के रूप में अस्तित्व में आया है। आदिवासी विमर्श अपनी आन्तरिक संरचना में सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रश्नों को धारण करता है। आदिवासी समाज का प्रश्न दुनिया भर में चल रहे अस्मिता मूलक प्रश्नों में सबसे ज्यादा मानवीय एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। आदिवासी विमर्श एक ओर जहाँ आदिवासी समाज के अस्तित्व के संकट की वकालत करता है, तो वहीं दूसरी ओर आदिवासी समाज में संघर्ष करने की क्षमता को भी विकसित करता है।

सदियों से उपेक्षित एवं शोषित आदिवासी समाज के अधिकारों का हनन प्रत्येक काल में हुआ है। जल, जंगल, जमीन और अन्य प्राकृतिक संसाधनों पर आदिवासियों की अपनी स्वतंत्र सत्ता थी। किन्तु साम्राज्यवादी तथा औपनिवेशिक सत्ता ने आदिवासियों का शोषण एवं दमन करते हुए, उनके संसाधनों पर जबरन कब्जा कर लिया। जिसके कारण खेती-किसानी करने वाले इन लोगों से इनकी जमीन छीन ली गई और ये लोग अपने ही खेतों में मजदूर बन गए। किन्तु प्रकृति के सहचर आदिवासी समाज ने आपसी सहयोग की भावना, सांस्कृतिक वैशिष्टय और कला इत्यादि गुणों को प्रत्येक परिस्थिति में सुरक्षित रखा है। औपनिवेशिक सत्ता ने आदिवासी समाज को सिर्फ आर्थिक एवं सामाजिक रूप से ही प्रभावित नहीं किया बल्कि इनके सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्यों को भी प्रभावित किया। स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में जब आदिवासी समाज को भी संविधान के अधीन एकसमान अधिकार प्रदान किये गये और वैश्विक स्तर पर मानवाधिकार जैसी अवधारणाओं एवं संस्थाओं का उदय हुआ। तब आदिवासी समाज की समस्याओं को रेखांकित किया जाने लगा। जिसके परिणामस्वरूप आदिवासी समाज के विकास एवं उत्थान हेतु विभिन्न प्रयास किये जाने लगे। हालांकि ये प्रयास बहुत ही सीमित एवं नगण्य ही रहे हैं। किंतु इनका प्रभाव यह हुआ कि समाज में मानवता एवं समानता के पक्षधर और इस उपेक्षित वर्ग की चिंता करने वाले जन-समूह ने एक मंच पर आकर आदिवासी समाज के अधिकारों एवं विलुप्त होते अस्तित्व की ओर दुनियाभर का ध्यान आकर्षित कराने का प्रयास किया। कुछ समाजसेवियों, चिंतकों और साहित्यकारों ने आदिवासी समाज के बीच जाकर, उनके हालात जानने की जेहमत भी उठाई।

इक्कीसवीं सदी में आदिवासी विमर्श समकालीन समाज में हस्तक्षेप करते हुए आगे आता है किंतु धीरे-धीरे द्वन्द्वात्मकता इसकी गति को प्रभावित करने लगती है। एक ओर तो जहां आदिवासी समाज की सभ्यता, संस्कृति एवं जीवन मूल्यों को संरक्षित रखने की चुनौती है। तो वहीं दूसरी ओर विज्ञान, तकनीकी और आधुनिक जीवनोपयोगी संसाधनों से उनको जोड़ने की आवश्यकता है। भूमंडलीकरण तथा संचार माध्यमों के प्रभाव से आदिवासी समाज आधुनिक जगत से जुड़ रहा है किंतु इसके परस्पर उसकी मौलिक चेतना, जीवन शैली, भाषिक विविधता और सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास भी हो रहा है, जिससे उनके अस्तित्व एवं अस्मिता पर संकट गहराने लगा है। वास्तव में आदिवासी समाज के लिए आज एक ऐसी व्यवस्था की जरूरत है, जो उनके उत्थान में सहायक हो, किन्तु उनकी अपनी अस्मिता एवं पहचान बनी रहे।

कपिल कुमार गौतम